SHRI DIGAMBER JAIN ACHARYA

SANSKRIT MAHAVIDYALAYA

JAIPUR

www.jainsanskritcollege.com

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
[illegible] रोड, सांगानेर, जयपुर-29 (राज.)

सम्भाषणस्य पुस्तकानि

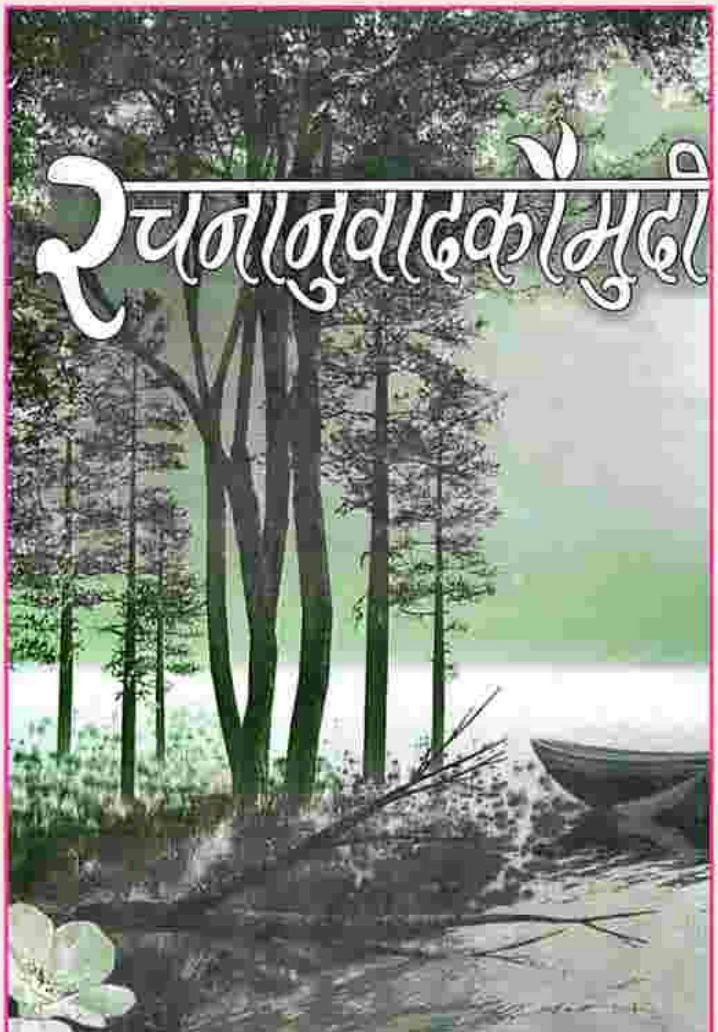

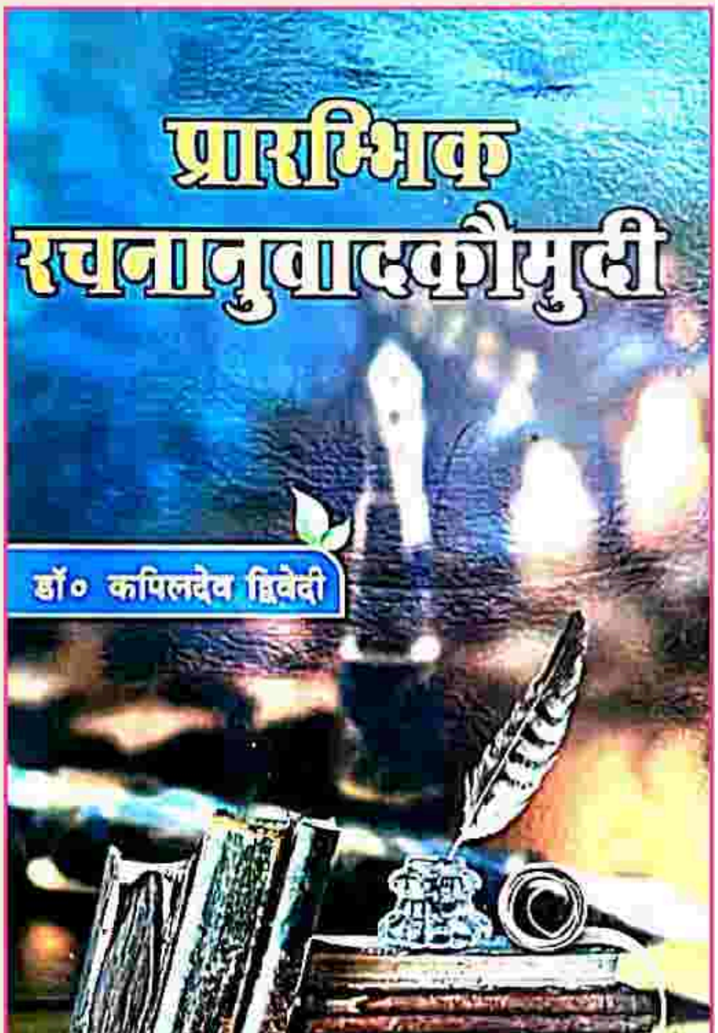

प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, साँगानेर, जयपुर-29 (राज.)

सम्भाषणस्य पुस्तकानि

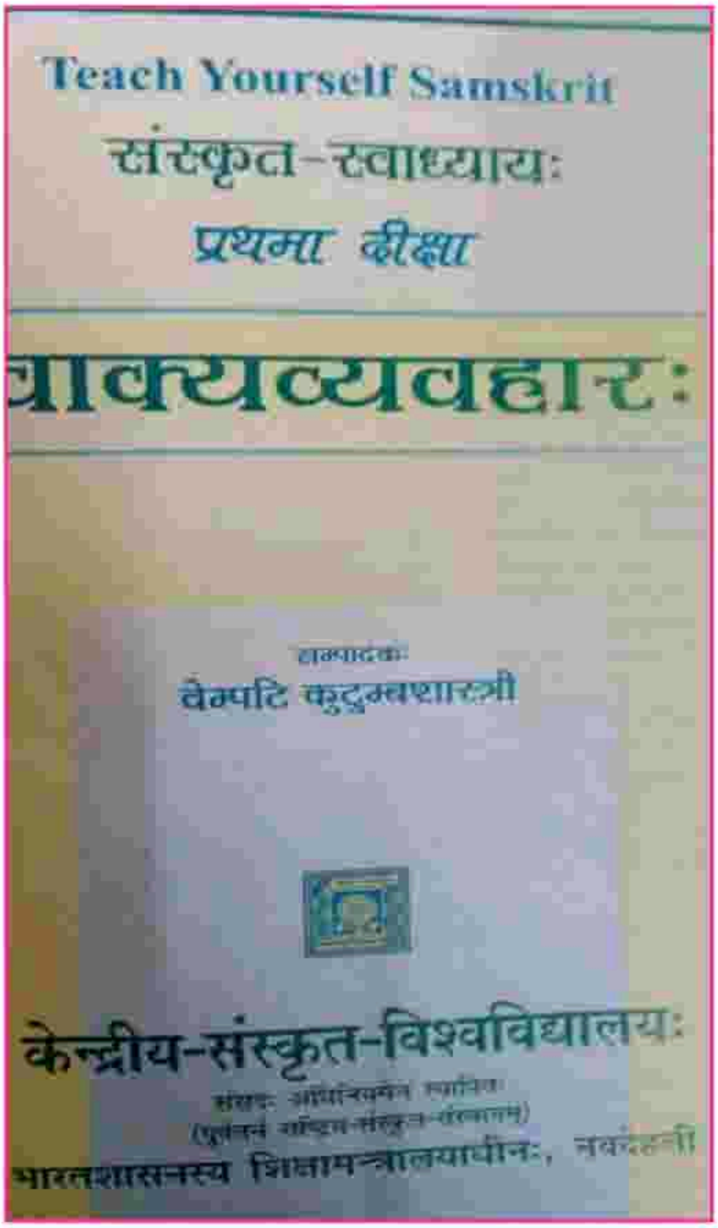

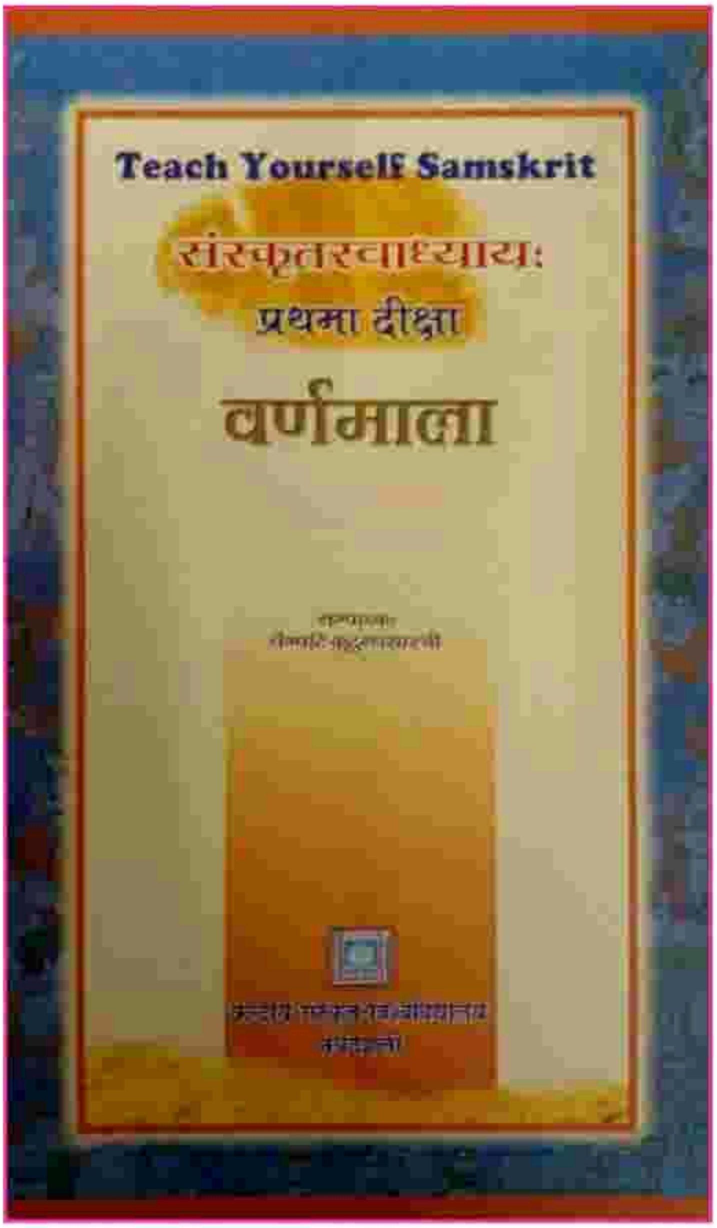

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, साँगानेर, जयपुर-29 (राज.)

सम्भाषणस्य पुस्तकानि

...दीक्षा - वाक्यव्यवहारः

...शकः - कुलसचिवः
केन्द्रीय-संस्कृत-विश्वविद्यालयः
56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया
जनकपुरी, नवदेहली - 110 058
दूरभाष : 28524993, 28521994, 28524995, 28520977
फैक्स: 28524532, 28524187, 2830976
E-mail: registrar.sansthan@gmail.com
rsksale@yahoo.com
website: www.sanskrit.nic.in

प्रथमसंस्करणम्	- जनवरी,	२००१	- १,०००	प्रतयः
प्रथमपुनर्मुद्रणम्	- अगस्त,	२००२	- ४,०००	प्रतयः
द्वितीयपुनर्मुद्रणम्	- अगस्त,	२००३	- ५,०००	प्रतयः
तृतीयपुनर्मुद्रणम्	- अगस्त,	२००३	- ३०,०००	प्रतयः
चतुर्थपुनर्मुद्रणम्	- दिसम्बर,	२००३	- २०,०००	प्रतयः
पञ्चमपुनर्मुद्रणम्	- मार्च,	२००४	- ५०,०००	प्रतयः
षष्ठपुनर्मुद्रणम्	- दिसम्बर,	२००७	- २०,०००	प्रतयः
सप्तमपुनर्मुद्रणम्	- जुलै,	२००९	- ५,०००	प्रतयः
अष्टमपुनर्मुद्रणम्	- सितम्बर,	२०१०	- ५,०००	प्रतयः
नवमपुनर्मुद्रणम्	- दिसम्बर,	२०११	- ३,०००	प्रतयः
दशमपुनर्मुद्रणम्	- सितम्बर,	२०१२	- १०,०००	प्रतयः
एकादशपुनर्मुद्रणम्	- जून,	२०१३	- १५,०००	प्रतयः
द्वादशपुनर्मुद्रणम्	- जनवरी,	२०१६	- २५,०००	प्रतयः
त्रयोदशपुनर्मुद्रणम्	- मार्च	२०१८	- १०,०००	प्रतयः
चतुर्दशपुनर्मुद्रणम्	- अक्टूबर	२०१९	- १०,०००	प्रतयः
पञ्चदशपुनर्मुद्रणम्	- नवम्बर	२०२१	- ५०००	प्रतयः

© केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली
ISBN [illegible]

मूल्यम् - 500/- रूप्यकाणि (गुच्छस्य)

मुद्रकः
प्रिंटेक इंटरनेशनल
ए-6/सी, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया
दिल्ली - 110 0095
E-mail: printechinternational@gmail.com

संस्कृतस्वाध्यायः

प्रथमा दीक्षा

मार्गदर्शकसमितिः

प्रो० श्रीधर वसिष्ठः
श्री चमू. कृष्णशास्त्री
श्रीमती शशिप्रभा गोयल
डा० विश्वासः

प्रो० के.वि. रामकृष्णमाचा...
डा० चाँद किरण सलूजा
श्री जनार्दन हेगडे
डा० ग. देवनाथन्

सहसम्पादकाः

ललित कुमार त्रिपाठी
वाई.एन. रमेशः
मुकुन्द कुमार सेनापतिः
दनमाली बिश्वालः

सहयोगिनः

...कारः - कल्लोल मजूमदार
...कारी - बृज बलेटिया
विजय बलेटिया

सहचित्रकारः - भास्कर सिं...
अक्षरसंयोजकः - जवाहर लाल...

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, साँगानेर, जयपुर-29 (राज.)

सम्भाषणस्य पुस्तकानि

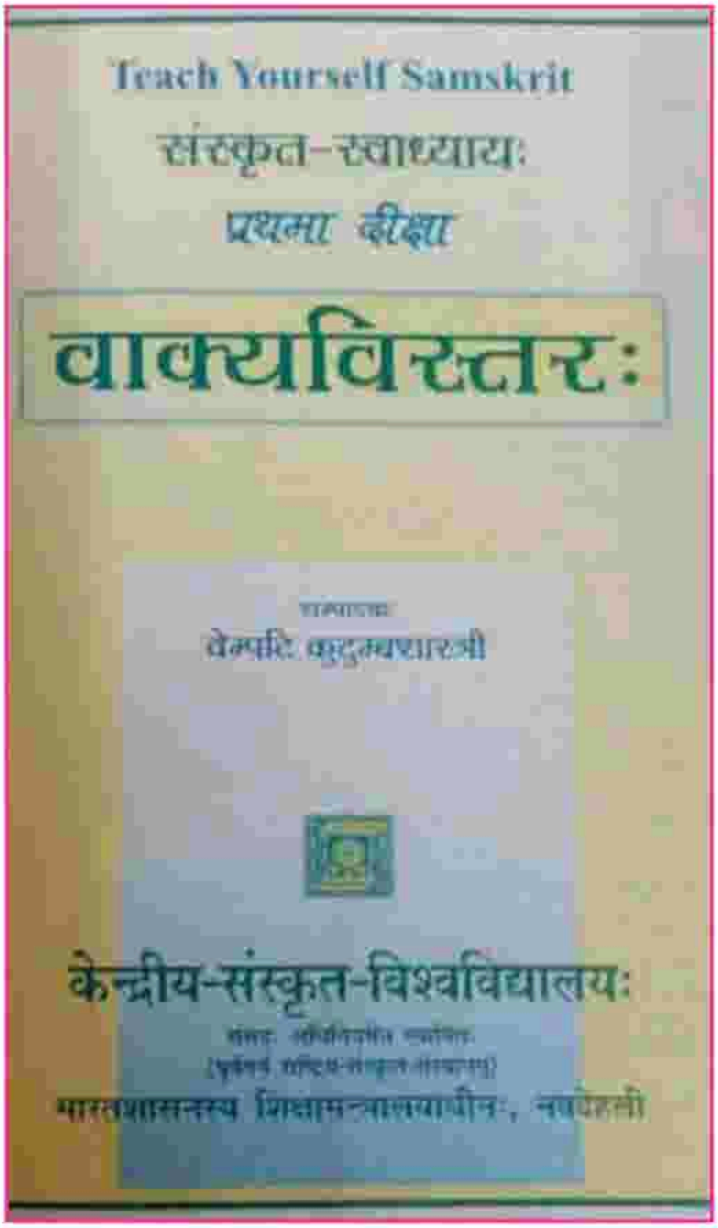

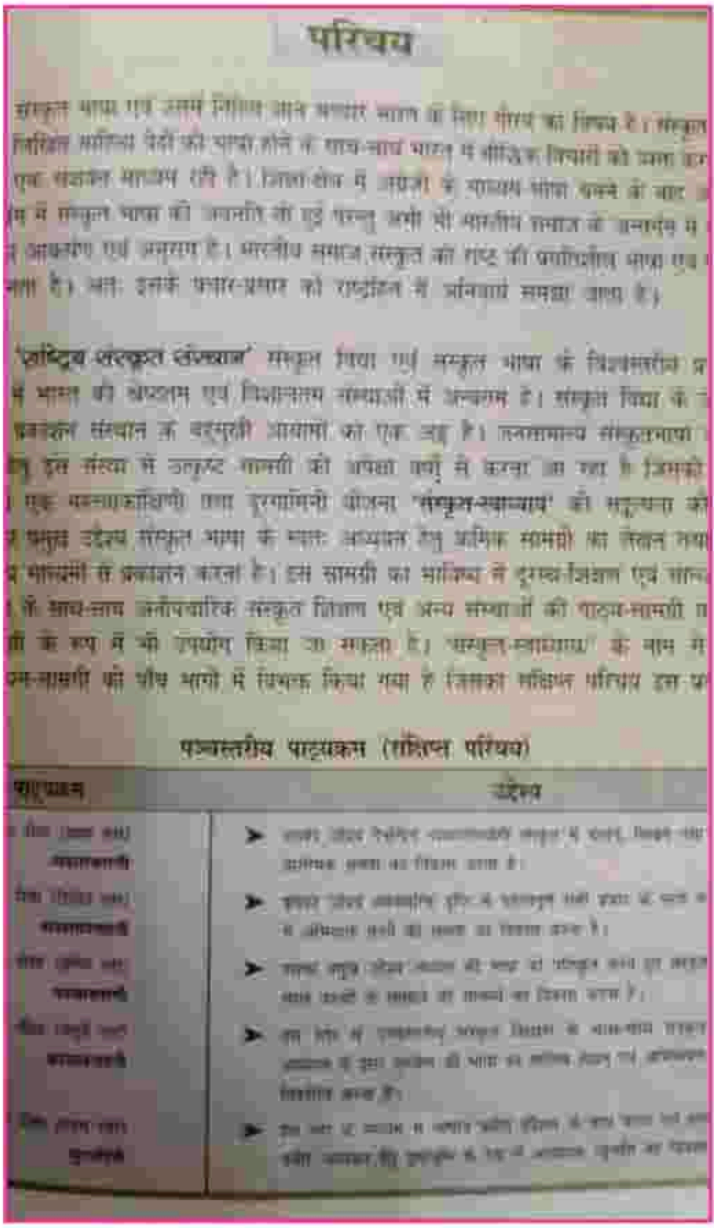
परिचय

पञ्चस्तरीय पाठ्यक्रम (संक्षिप्त परिचय)

पाठ्यक्रम	उद्देश्य

प्राचार्य

श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, साँगानेर, जयपुर-29 (राज.)

सम्भाषणस्य पुस्तकानि

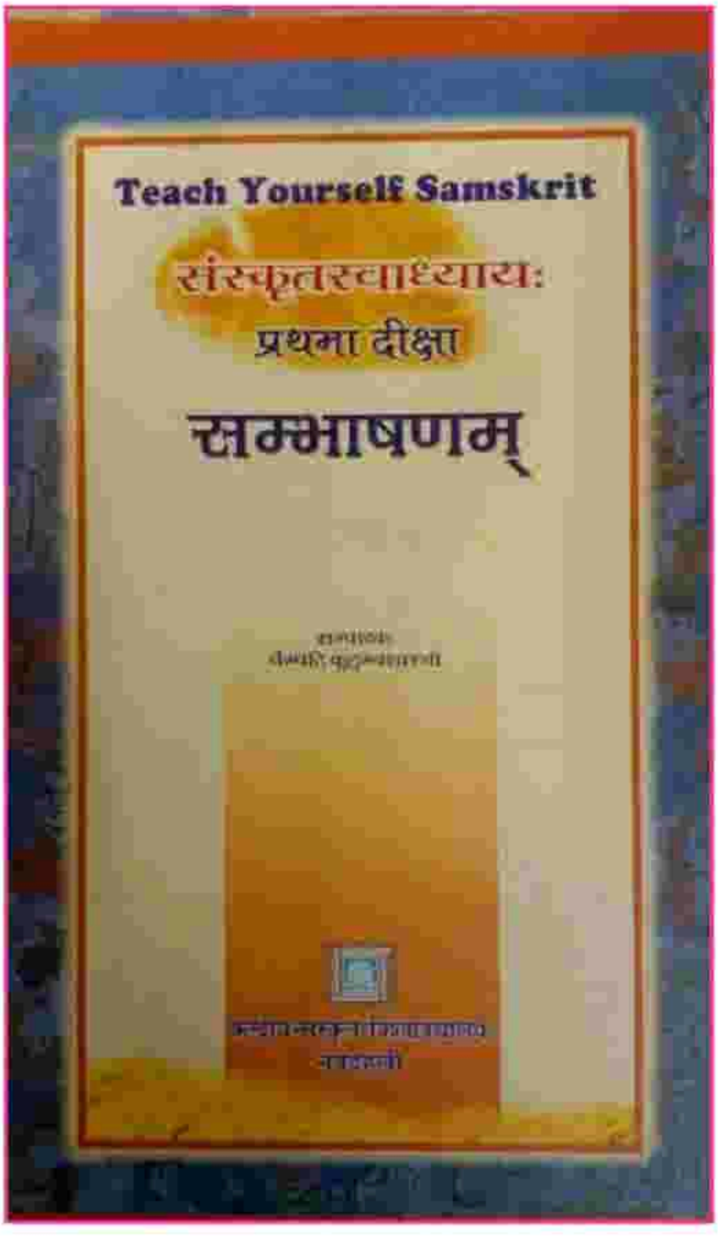

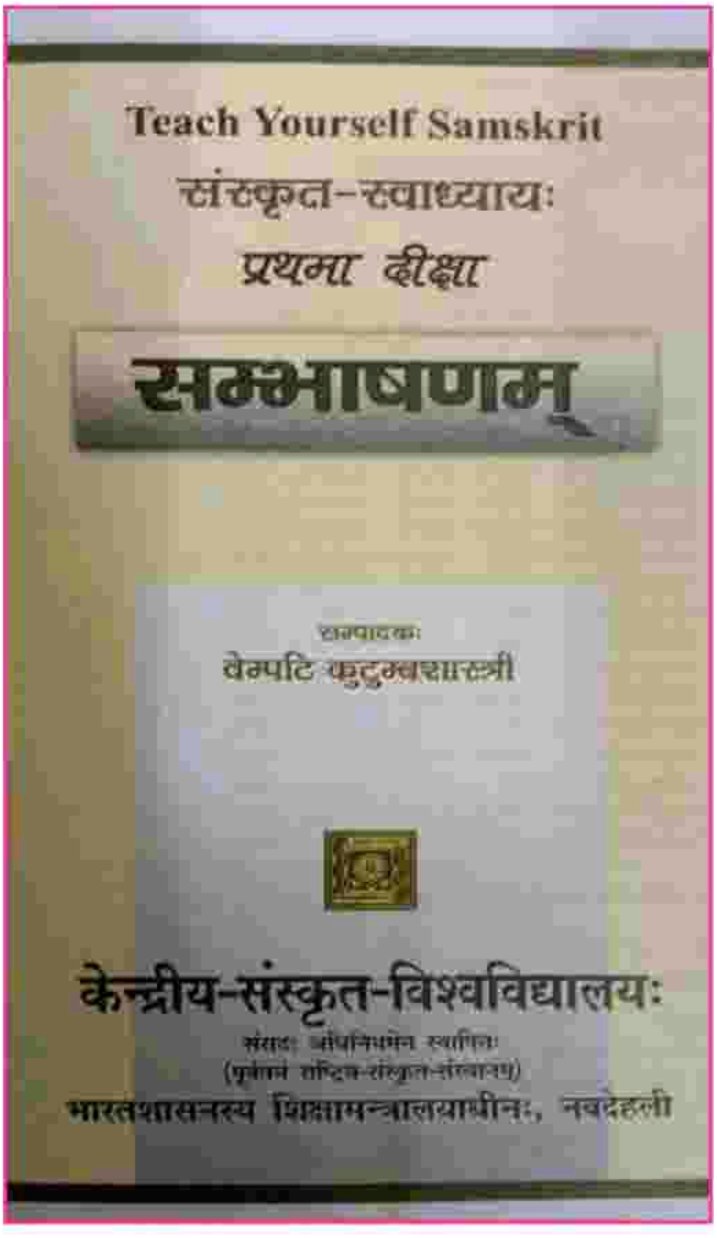

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, साँगानेर, जयपुर-29 (राज.)

सम्भाषणस्य पुस्तकानि

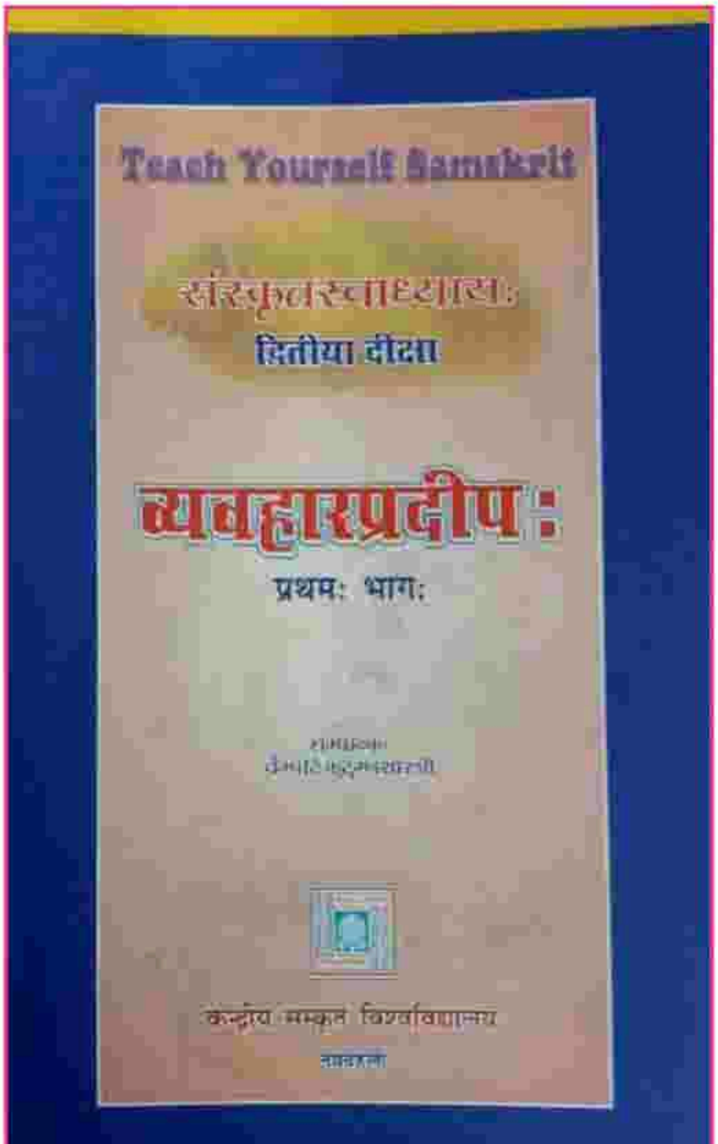

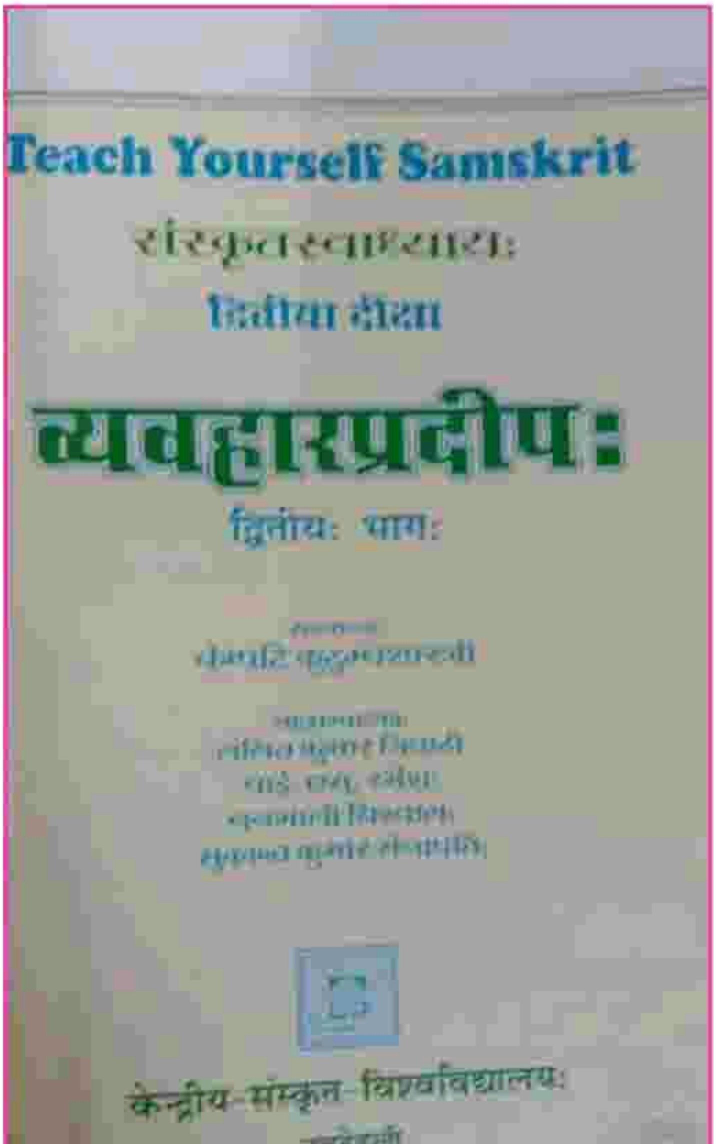

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, साँगानेर, जयपुर-29 (राज.)

सम्भाषणस्य पुस्तकानि

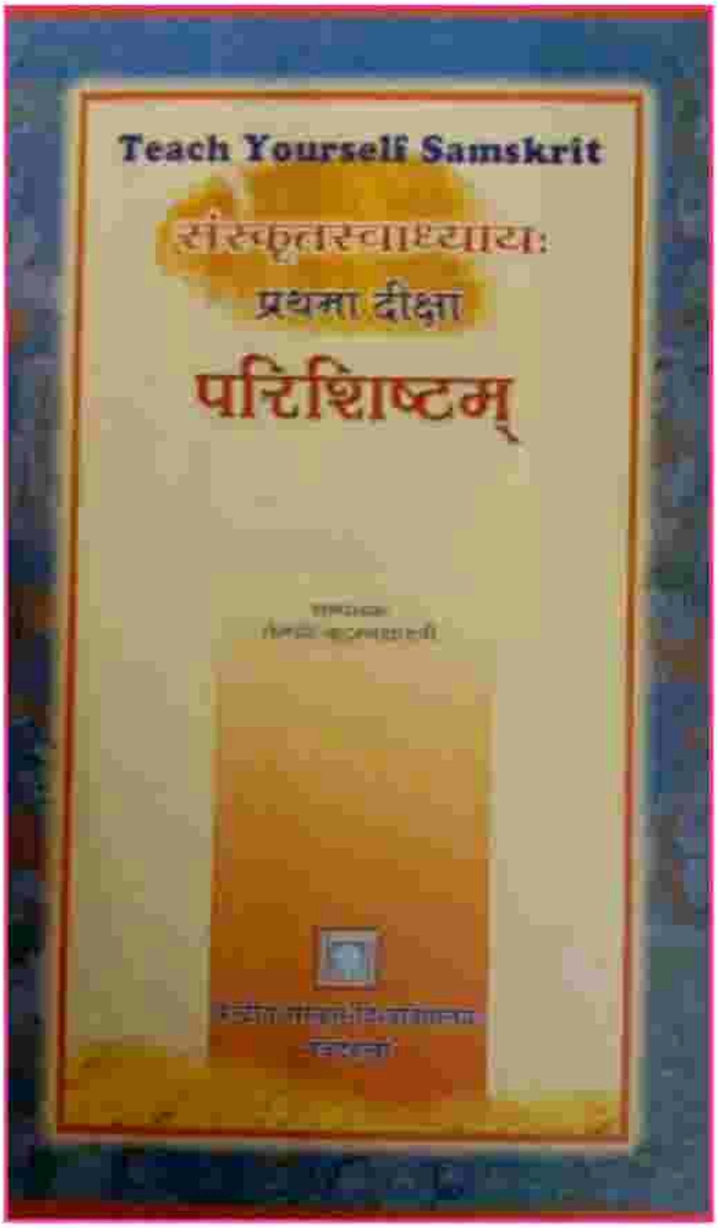

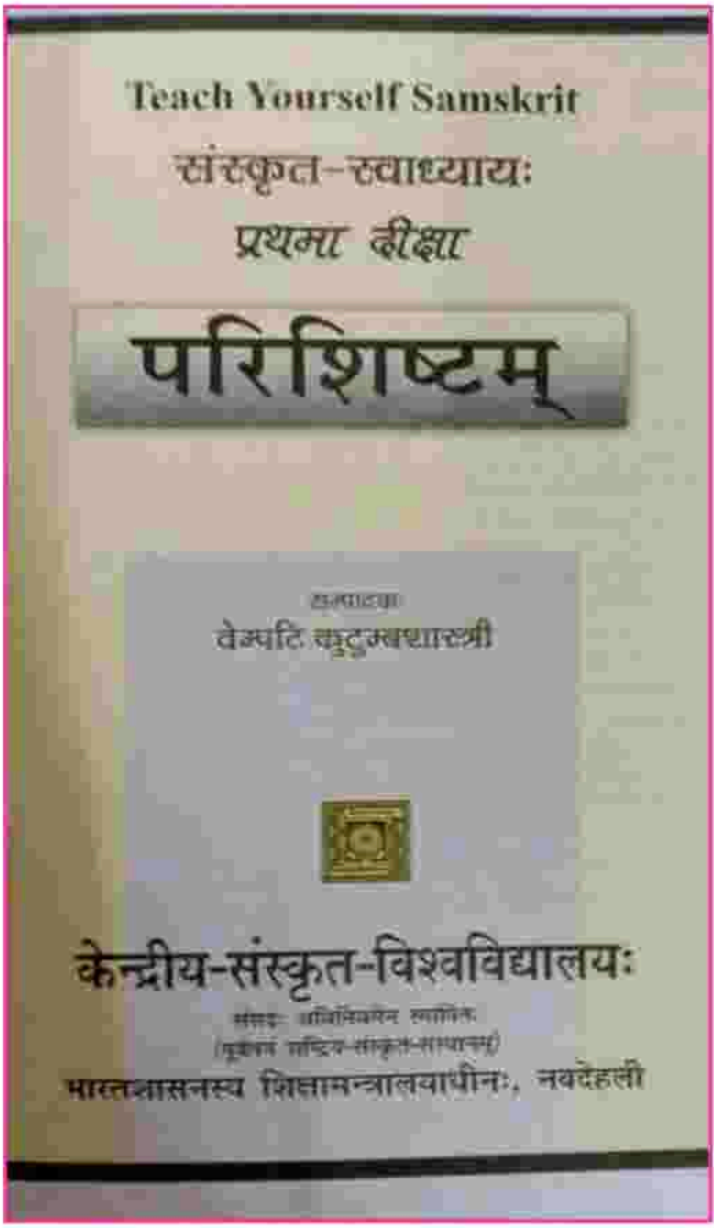

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, साँगानेर, जयपुर-29 (राज.)

सम्भाषणस्य पुस्तकानि

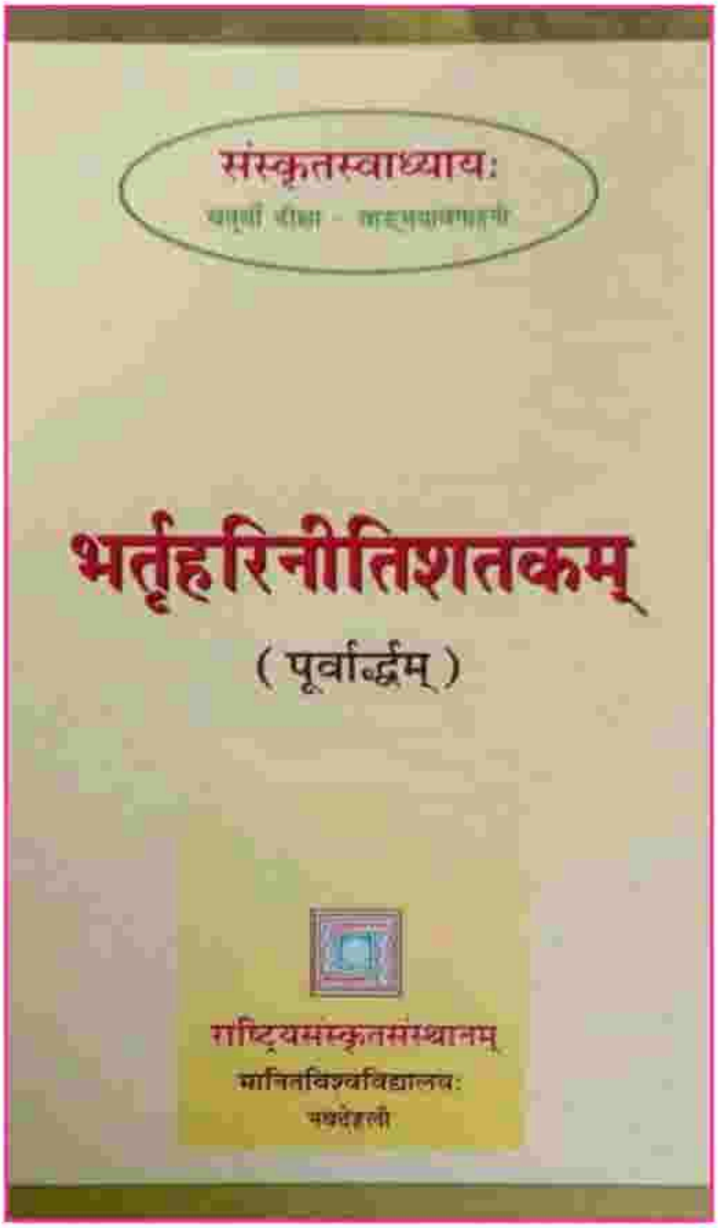

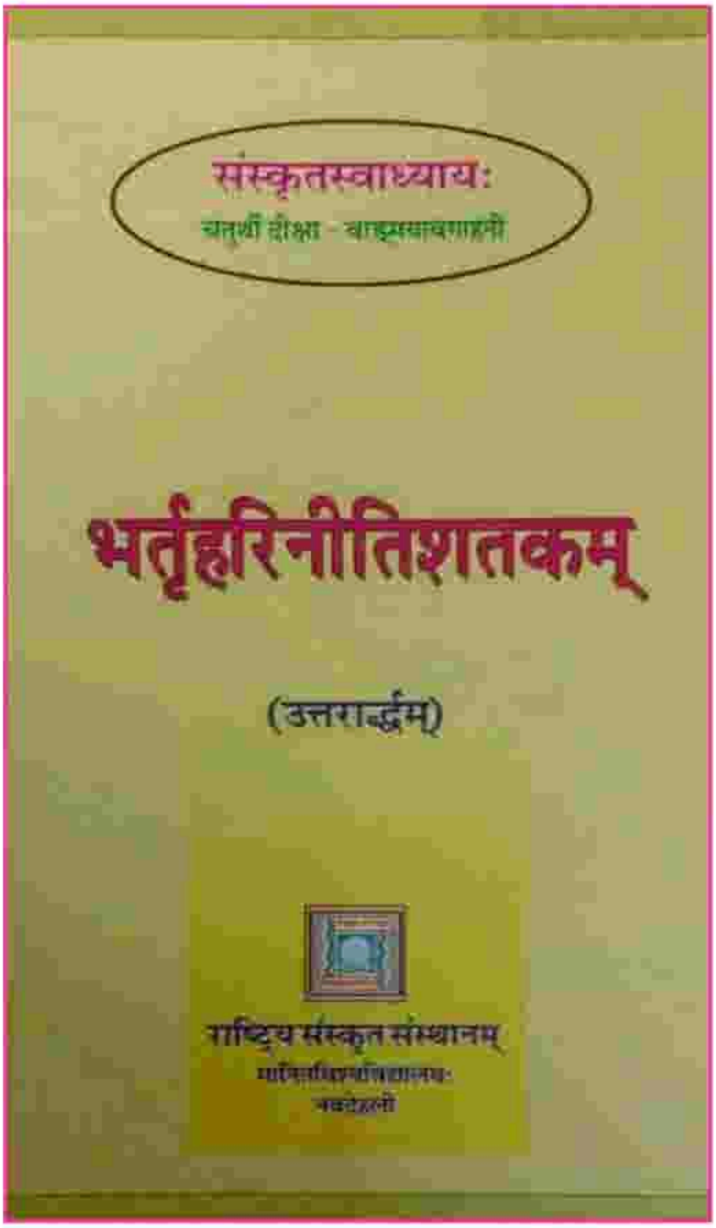

प्राचार्य
श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
जैन नसियाँ रोड, साँगानेर, जयपुर-29 (राज.)

सतां सद्भिः संगः कथमपि हि पुण्येन भवति।

सज्जनों का सज्जनों से सम्बन्ध किसी प्रकार बडे पुण्य से होता है।

—महाकवि भवभूति (उ.रामचरित 2/1)

ध्रुवं फलाय महते महद्‌भिः सह संगमः।
महान् पुरुषों की संगति निश्चय ही महान् फल देती है
–सोमदेव (कथासरित्सागर 12/5/150)

बुद्धिर्नाग्रेसरी यस्य न निर्बन्धः फलत्यसौ ।
जिस प्रयत्न में बुद्धि अग्रसर नहीं होती, वह प्रयत्न कभी सफल नहीं होता ।
:– आदि पुराण, 46 वाँ पर्व, 61–451

विद्या धर्मावगाहश्च जायतेऽवहितात्मनाम् ।।
विद्या और धर्म की प्राप्ति स्थिर चित्तवालों को ही होती है।
– पद्मपुराण – 26/71

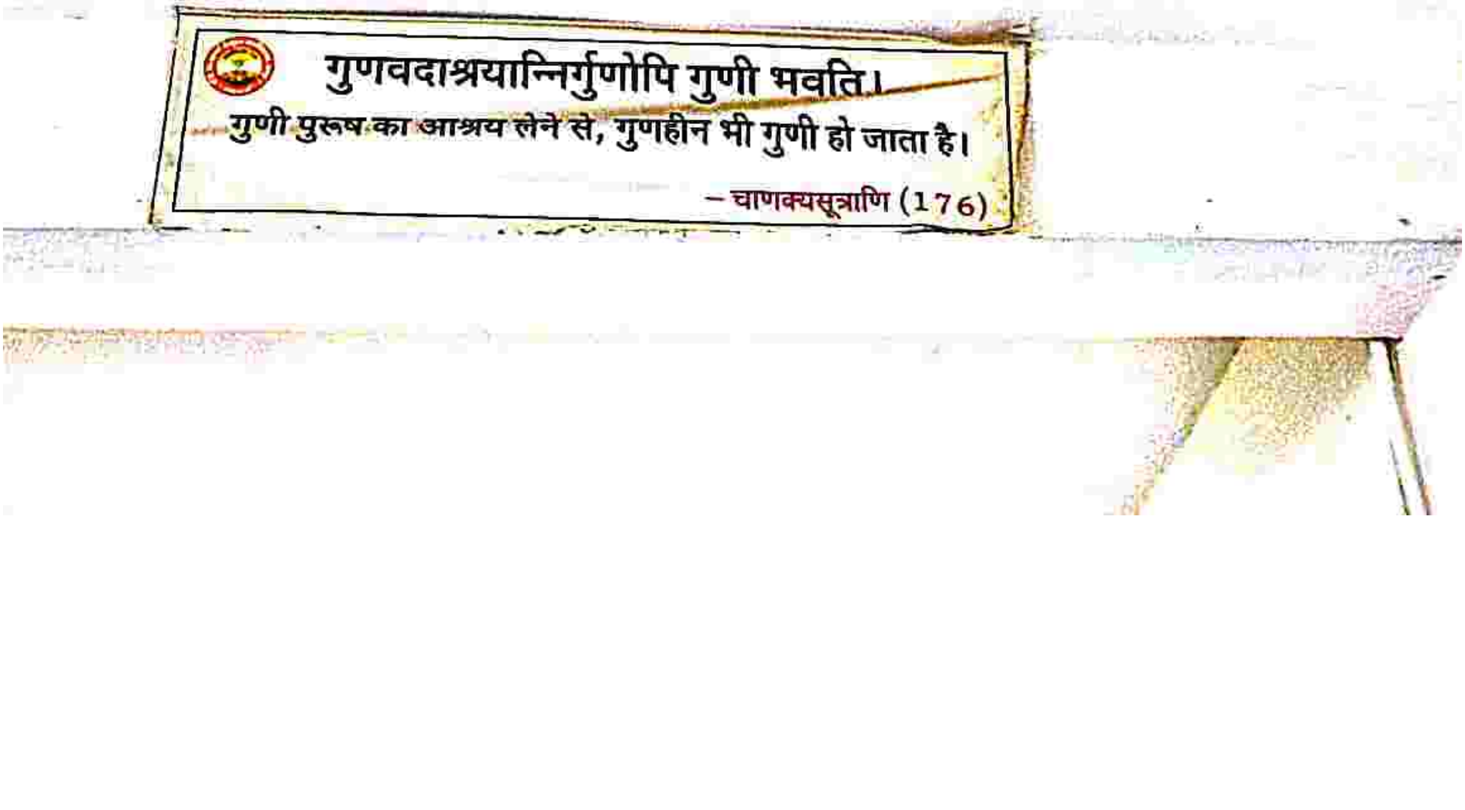
गुणवदाश्रयान्निर्गुणोपि गुणी भवति।
गुणी पुरूष का आश्रय लेने से, गुणहीन भी गुणी हो जाता है।
– चाणक्यसूत्राणि (176)

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलं।।
बड़ों का अभिवादन करने वाले मनुष्य की और नित्य वृद्धों की सेवा करने
वाले मनुष्य की आयु, विद्या, यश और बल– ये चार चीजें बढती हैं।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ।।
प्रिय वाक्य बोलने से सभी जीव संतुष्ट हो जाते हैं, अतः प्रिय वचन ही बोलने
चाहिए। ऐसे वचन बोलने से कंजूसी कैसी ?

जायते विफलं कर्माप्रेक्षापूर्वकारिणाम्।

बिना विचारे कार्य करने वालों का कार्य निष्फल हो जाता है।

– पद्मपुराण– 12/165

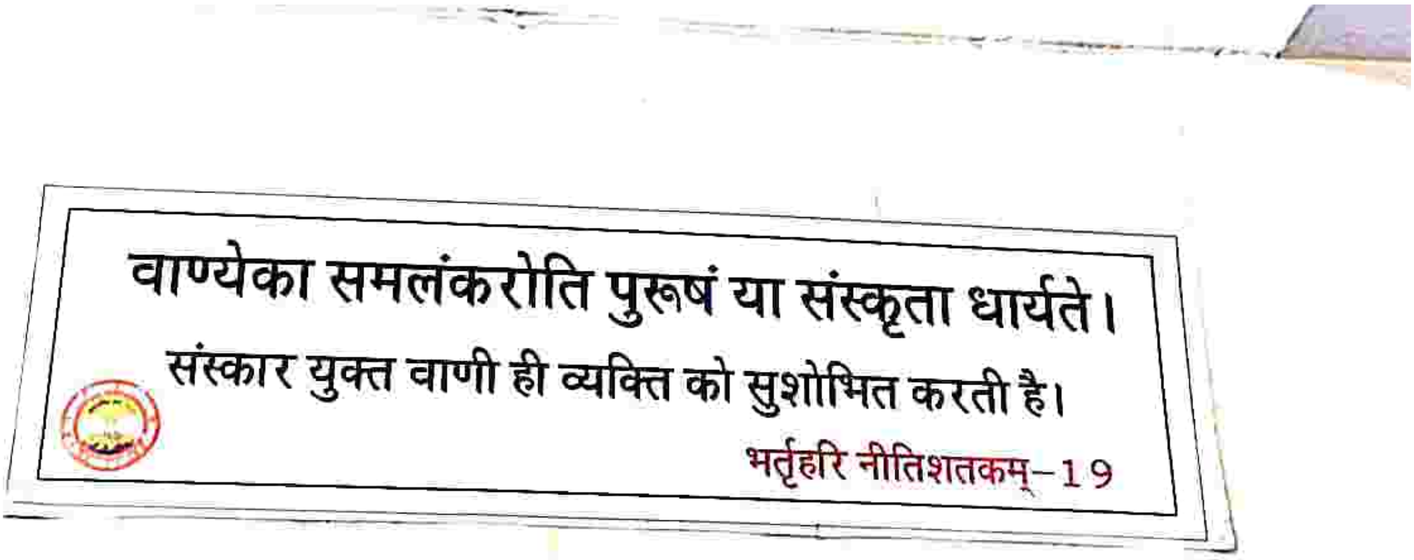
वाण्येका समलंकरोति पुरूषं या संस्कृता धार्यते।
संस्कार युक्त वाणी ही व्यक्ति को सुशोभित करती है।
भर्तृहरि नीतिशतकम्–19

न विद्‌यते हि विद्यायामगम्यं रम्य वस्तुषु।

विद्या के होने पर सुन्दर वस्तुओं में से ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जो मिल न सके।

क्षत्रचूड़ामणि, सप्तम लम्ब, 55-231